

रूप पंचगव्य
 मधु पंचामृत
 गन्ध पंचगन्ध
 वस्त्र पंचावधि
 धर्म पंचपञ्चव
 पंचवक्त्र
 पंचवल्गु
 पंचगव्योपधि

१ सात्त्विक भोजनो नास्त्यन्यथा भोजनं नास्ति ॥ १
 २ जातिनामगता गव्येन लोभीना वदमा लोभी ॥ २

सुखं वपुः प्रसन्नं
 सुखं वपुः प्रसन्नं
 सुखं वपुः प्रसन्नं
 सुखं वपुः प्रसन्नं
 सुखं वपुः प्रसन्नं
 सुखं वपुः प्रसन्नं
 सुखं वपुः प्रसन्नं

६२

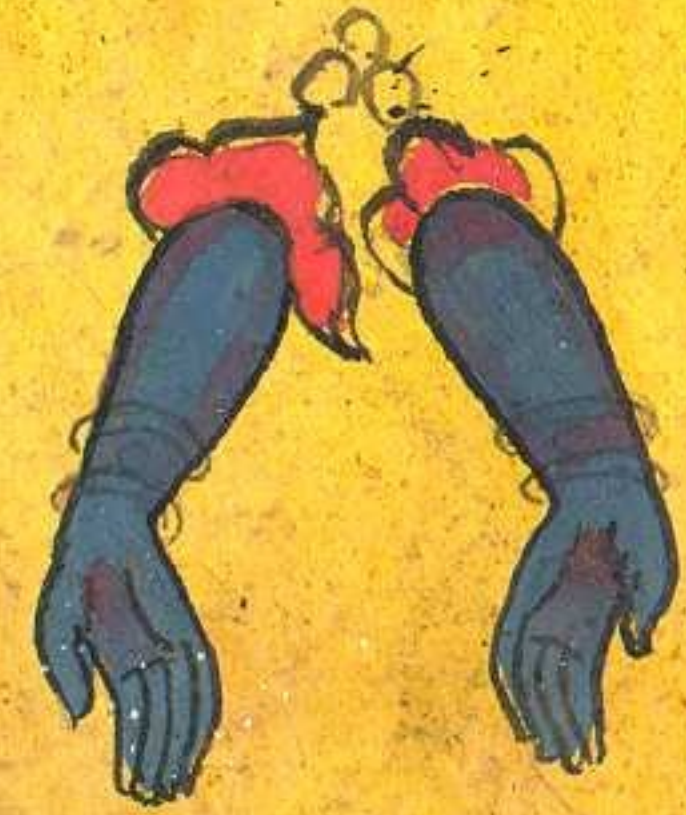
अस

वा निम दुष्प न प स मु न्न अथ वा त्रिद सा ल य नः डं व ड् ड्
 ली प ली हा के मु नि उ र्णा को स न स्मि ना स म य ह ल नि म्मा य व

हं का क न द य म् का न द व द म धु ल वि धा ना दि कं कू र्वा न् ॥ १ ॥ म द य न थान् य नि द्ध का

क न द वा न्ध व द्ध वि वि घ्न

१ हं हं जं जं ॥ वी ख ॥ १



१ डं व ड् ड् व ड् स म य ड् ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥



१ डं व ड् ड् न ला क् १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 मां ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥



ॐ वं कालानलाकुरु ॥ सुक



ॐ वं जानलददयवमथरं
जनरुद ॥ सुक



ॐ वं जननी वधुसर्वविघ्नाहं
नका



उद्वेगवृद्धं रुद्रं ॥ नील ॥



उद्वेगयुद्धं ॥ नील ॥



उद्वेगवृद्धं ॥ पीत ॥



उद्वेजवदकयटगिनिनम् ॥
नील ॥



उद्वेजकाल्यारुमादिक्षवन्ध
दजी द्वेजकालानूटमम् ॥ नील



उद्वेजहिषववूटमम् ॥ पीत ॥



ॐ वज्रकायहस्तं ॥ नील ॥



ॐ वज्रवन्धवं ॥ पीत ॥



ॐ मन्त्रमसामन्त्रखादा ॥



ॐ वंजानलदनदहय० मरु
जनह ॥

शुक्ल



ॐ वंजयूथस्वाहा ॥ शुक्ल ॥



ॐ वंजधूयस्वाहा ॥ नील ॥



ॐ वरुणांधस्वाहा॥यीग॥ ॐ वरुनेवशस्वाहा॥यीग॥ ॥ ॐ सर्वविघ्नहृत्स्वहा॥



परमेश्वरावता

उदङ्गपाहाइं॥नील॥



उदङ्गसुटवें॥शुक्ल॥



उदङ्गावहाइं॥पीत॥



उदङ्गावहाइं॥पीत॥

पुष्पा-गाम ॥

विक्रि विधि. ॐ न्याहा ताग यर. वरु दोन. वजां कुहादि. कान वधूयादि दव ता यनी दिगा. नर समय सत्व हान सत्व
वाहनं. ॥ वायादि ॥ ॥ उं हा क मून य यव व स का नाय. अर्घ यति रुखादा ॥ उं हा क मून य यव व स का नाय अ
वम नं यति रुखादा ॥ उं हा क मून य यव व स का नाय या क म हां यति रुखादा ॥ उं हा क मून य यव व स का नाय या यं यति रु
खादा ॥ ॥ राता यय न्यास ॥ ॥ उं म न २ म दा मून खादा ॥ उं हा क मून य रुं रुखादा ॥ उं व जा स्त्री या य रुं ॥ उं व ता स्त्री या
य रुं ॥ उं य मा स्त्री या य रुं ॥ उं वि (हा) स्त्री या य रुं ॥ उं ग जा ना सि न रुं ॥ उं व ज वि ध्य सी न रुं रुं ॥ उं व ज वि कि वि नि रुं रुं ॥
उं हा ता ग य रुं रुं ॥ ॥ उं व रु ना (हा) रुं ॥ उं व रु मा ल रुं ॥ उं व रु सी न रुं ॥ उं व रु नृ रुं ॥ ॥ उं मी रु व रु य खादा
॥ उं मू मा घ द ही न खादा ॥ उं स वे या य रुं रुं खादा ॥ उं स वे (हा) क ट भा घा ट न म रु खादा ॥ उं गंध रु सि न रुं ॥ उं स वे ग म रुं

द्विप्रति॥ तथ्येन॥ विज्ञान X ॥ ॥ ॥

ॐ सर्वविदुः सारलक्षणं ॥ श्रीगणेशाय ॥



ॐ सर्वविद्गुणीकृतो॥ वक्र॥ ॐ सर्वविद्गुणयुक्ता॥ विश्व॥ ॐ सर्वविद्गुणयुक्ता॥ लुक्॥ ॐ सर्वविद्गुणयुक्ता॥ यीक॥



ॐ सर्वविद्वज्जदीयज्ञान
का॥



ॐ सर्वविद्वज्जगन्मोक्षद
विष्णु



ॐ नमस्तस्मै कर्मिण्यधर्म
वकपुत्ररुतगोधाकुलसर्व
लोकाय सर्वदगति॥ यो न



ॐ सर्वविद्याय वादित्यनामनवज
वन्दनीककमिवा॥ गुरुवन्द्युष्ट
मिक्रयाग॥



तथथा॥ सर्वसमीपवज्रां
 कनियुष्मादिगनयुर्वेष्मादि
 क्षियुष्माभदनन॥ ३ सर्वगथा
 गगयूजाय
 स्माननि
 सर्वग
 जस
 छिग
 मुका



१ गथेवस्तुयवज्रांजलिद्वी
 कृत्वादिद्विष्टादिद्विलला
 गनरुमिस्तुसन्धुष्टमनन
 लुसर्ववित्यूजारिष्टकायात्मा
 न्निर्योकया
 मिसर्वग
 वलारि
 मां॥ छि
 क



१ गथेवस्तुयवज्रांजलिवंधन
 सिवथायधिमदिहिमस्वनरुमी
 वृत्तुष्माभन॥ सर्ववित्यूजायवर्त
 नायात्मानन्निर्योकयामिसर्वगथ
 गगधर्मयव
 रुयामां॥ छि
 क



१ गथेवस्तुयवज्रांजलिद्विष्टा
 वृत्तयिद्वीष्टाकृत्वादिद्विमंधन
 मिसुसन्धुष्टमनन॥ ३ सर्ववित्यू
 जाकर्मनजात्मानन्निर्योकयामिसर्व
 गथागगवज
 कर्मकृत्वा
 छि



समन्वाहन्नुमादहासदिशुसर्ववृद्धवाधिसत्त्वासर्वकथागतवज्रमहियमकर्मकलावस्तिगाय्यसर्वमूढामनुदवगानाश्चअहं
मनुकानामादहासदिशुसर्ववृद्धवाधिसत्त्वानांयुवतःसर्वकथागतवज्रमहियमकर्मकलावस्तिगानांसर्वमूढामनुविद्यादव
गानाश्चयुवतःसर्वयाययकिदहायामि. विस्मयदहासदिशुअकिगानागतयत्यनानांसर्वकथागतानां(हायवकधातुसर्ववृद्ध
वाधिसत्त्वानांयुत्यकधैवेर्यो)आवकसम्यग्मेकानांसम्यक्कियंतानांसर्वसत्त्वनिकायानांसर्वयुध्यमनसादयामिदहासदिशु
सर्ववृद्धाशुवकायवर्णिगधर्मवक्त्रवर्णमायदहासदिशुसर्ववृद्धानांरुगावगःपायविधिबोहुकामनायावयनिनिर्वाणाय
॥ ० ॥ ॥ ॥ सर्वयायहृन्वजहृद्गुणैःसर्वयायविष्णुधनवजहृद्गुणैःसर्वकर्मविनष्टानिहस्मीवृत्तहृद्
उजुविनासपवनक्षानिहृद्गुणैःसर्वविष्णुधनवजहृद्गुणैःसर्वकर्मविनष्टानिहृद्गुणैः
उहृत्सुतश्चसुतश्चावजहृद्गुणैःसर्वविष्णुधनवजहृद्गुणैःसर्वकर्मविनष्टानिहृद्गुणैः
यश्चसर्वयायनिहृद्गुणैःसर्वविष्णुधनवजहृद्गुणैःसर्वकर्मविनष्टानिहृद्गुणैः

ॐ सर्ववित्पुत्रयूजामघसम्
दसुवनसमयज्ञः॥

शुक

ॐ सर्ववित्पुत्रयूजामघसम्
मूदसुवनसमयज्ञः॥ नका॥

ॐ सर्ववित्पुत्रयूजामघसम्
मूदसुवनसमयज्ञः॥ नका॥

ॐ सर्ववित्पुत्रयूजामघसम्
दसुवनसमयज्ञः॥ शुक॥



ॐ सर्वविद्याध्यालंकारयूजाम
घसमदसुवहासमयद्रं॥ पीत



ॐ सर्वविद्यास्यलास्यवर्गिकां
तामोष्मानूरुवयूजामघसम
सुवहासम यद्रं॥ न क



ॐ सर्वविदनूरुवयूजाम
घसमदसुवहासमयद्रं॥ पीत



ॐ सर्वविद्वजयूजामघसमदसु
वहासमयद्रं॥ नील



ॐ सर्वविष्णुसावज्जगद्वदान
यावमिगायूजामघसमूदसू
ब्रह्मसमयज्ञः॥

कुं



ॐ सर्वविद नरु वमदावाध्वा
दावनीलीलयावमिगायूजाम
घसमूद
यज्ञः॥

सुं ब्रह्मसम
यीत



ॐ सर्वविद नरु वमदावाध्वा
यावमिगायूजामघसमूदसू
दासमयज्ञः॥

कन



ॐ सर्वविष्णुसावज्जगद्वदान
मदावीर्ययावमिगायूजामघसमू
दसूब्रह्मसमयज्ञः॥

विष्णु



ॐ सर्वविद नरु वसो ध्या विदा
वध्वा नया वामिना यूजा मघ सम
दसु वहा सम यद् ॥

विष्णु

ॐ सर्वविद नरु वक्रा कृद नय
हा या नमिना यूजा मघ सम दसु
वहा सम यद् ॥

वीर

ॐ सर्वविग हाना ला क पुत्रिधि
या न यूजा मघ सम दसु वहा सम
यद् ॥

शुक्र

ॐ सर्वविस्सर्वा या यगन्ध विना स
निवज गंधाय या नमिना यूजा मघ सम
दसु वहा सम यद् ॥

वीर



ॐ सर्वविद्याय नमो नमः
मघसमदसुवदसमयदं ॥ कु

ॐ सर्वविद्याय नमो नमः
मघसमदसुवदसमयदं ॥ वरु

ॐ सर्वविद्याय नमो नमः
मघसमदसुवदसमयदं ॥ नील

ॐ सर्वविद्याय नमो नमः
मघसमदसुवदसमयदं ॥ पीत ॥



आत्मानं सर्ववृद्धाधिसत्त्वस्थानियोग्यामि सर्वदा सर्वकानं यगिगृह्णन्तु मां मदाकावृष्टिकानाथा मदासमयसिद्धिश्च नः पुण्यं कुरु
व कृष्णलसूल सर्वसत्त्वसाधनहाकरु वाः॥ जननकृष्णलसूलन सर्वसत्त्वाः सर्वलोकिकलाकारविविधविगता रुवन्तु॥ सर्वः
लोकिकलाकारवसम्यगिसमन्विताश्च सदेवसत्त्वनसदेवसामनस्य न वृद्धा रुवन्तु नलात्मा॥ जननवाहं कृष्णलनकर्तृदा रुवन्तु
वृद्धा न विलनलाकदधानधर्मोऽङ्गादिगाय मावयसत्त्वावद्दुःखयातिगानिगिज्जन्तु वाया संम्यक् वाधो गथादं यविष्ठासय
सम्वदगृहीयात्॥ उत्पादयामि यवसंवाधिविरुमनव॥ यथागियधकानाथाः संवाधो कुरुनिधयः शिर्धसिदसिष्ठाश्च कृष्णवध
मसंगदं॥ सत्त्वार्थकिया हि वरुयगिगृह्णामिदं दृढः वृद्धधर्मोऽङ्गसंघश्च शिबलागमनरुव॥ अथाऽष्टागृहीयामि सम्वदं वृद्धया
गृह्णः वरुध्वं वमृदाश्च यगिगृह्णामि गत्वः आचार्यश्च गृहीयामि मदा वरु कृत्वा वयत्॥ वरुदानयदास्यामि वरुत्वा रुदिनदिन
॥ मदा वलकृत्वा रासमयश्च मना वसा॥ सद्मं यगिगृह्णामि वाक्कुक्कुरियानिकं॥ मदा यमकृत्वा सद्मं मदा वाधिसमरुवत्॥ सम्वदं

सर्वसंयुक्तं युक्तिगुणमिसर्वगः॥ यूजाकमेऊथासक्तमदाकर्मकूलाच्चय॥ उत्पादयित्वायवमंवाधिविरुमनूरुवं॥ गृहिणंसन्धवक
 सर्वसत्त्वार्थकावनाग॥ जूनीधुनावयिष्यामि जूमकाभावयाम्येदं॥ जूनास्वास्वनस्वासयिष्यामिसर्वसत्त्वांस्तु ययिष्यामि नृवृणा॥ १
 कसनावरुयूवक॥ रतायुतिविन्दयिष्यामि मदावधयूवकसर्वजुधिष्ठिर॥ २

उज्ज्यान्यानृगतासर्वधर्मो॥ गु
 क पीत॥



उयवध्यमानुषविष्णुसर्वधर्मो
 पीत॥



उज्ज्यान्यानृगतासर्वधर्मो॥
 पीत



उसर्वविद्वज्वंधनद॥ पीत



ॐ वंशं वंशजः ॐ निष्ठ वंश
 दृष्टा मरु वंशजः वंश मरु वंश
 दय मरु वंशजः वंश मरु वंश
 मय मरु वंशजः वंश मरु वंश ॥ श्रीग

ॐ वंश मरु वंश ॥



श्रीग ॐ सर्वविघ्नहर्त्रा धनं सर्वपा
 पानय नय ॥ श्रीग



ॐ सर्वविघ्नहर्त्रा धनं सर्वपा
 पानय नय ॥ श्रीग



ॐ सर्वविघ्नहर्त्रा धनं सर्वपा
 पानय नय ॥ श्रीग



श्रीग ॐ सर्वविघ्नहर्त्रा धनं सर्वपा
 पानय नय ॥ श्रीग



श्रीग ॐ सर्वविघ्नहर्त्रा धनं सर्वपा
 पानय नय ॥ श्रीग



ॐ नमः सर्वदुर्गतियत्रि (क्षध
नना जायतथागताया संगसं
म्य सं वृद्धायतशथा ॥ ॐ (क्षध
२ सर्वपापवि (क्षधन शुद्धवि
शुद्ध सर्वकर्मावनष्टविशुद्ध
हा ॥



नमस्तु नमस्तु सर्वदुर्गतिनिवर्धनमधुलयनिनिवर्धनरुवर्धनकावर्धनकूष्माण्डीवर्धनवर्धन
 द्विष्टाकर्षणमन्त्राकासमधुलयवर्धनवर्धनवर्धनवर्धनवर्धनवर्धनवर्धनवर्धनवर्धनवर्धनवर्धन
 नथागमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 वक्षःकर्मिन्देरावर्धन ॥ १ ॥ यथागमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु ॥ ० ॥

१ गताक्षा मूनयद मजकाव वधुमधुलं रावयन्
वधुलमधु ॥ ३ मून २ मदा मूनय स्वादा ॥ यीन ॥



उसंखविद्धजवकुं॥यीन॥



ॐ समयद्रं॥ ह्रुक्॥



यकि द्रु साः॥ ॐ यकि द्रु त्वमिमसत्त्वम
साव
न
वति॥
का



ॐ वज्रसत्त्वयं गाय॥ द्रवजयध्वनि॥ नील



गणामधुलगावत्यध्वगयावहगावं
॥ कर्मनयमिति॥
पीत



ॐ पूनः सत्त्ववजावधादयमूनयद्रजाधि
विराजकवगाद
यूयादयान्
विरमि
दत्ताशिवकवद्र
ॐ सर्वविद्रजाति
वका॥



ॐ वज्रधारध्वनीं जूरिषिं वमां ॥ ॐ सर्वद्रजवजिनी
जीनीं जूरि ॥ ॐ सर्वविद्रम
ॐ सर्वविद्रमेवजिनी
॥ मां॥ पीत॥



ॐ हं ३ वज्र पुष्पाक्ष ॥ आहं रुद्र ॥ ॐ
न



ॐ अश्वि विष्णु कृष्ण मणि वृद्ध वज्र नामा शिष्य
नील कल्यादि ॥



ॐ वं जाधिय किं त्वाम शिष्यं वामिनि सुवज्र समय
स्व वज्र नामा शिष्य कनड
वंद्रं ॥



ॐ सर्वे गथा वग सिद्धि वज्र समय शिष्य
वज्रस
७ वत्सांधा वयामि
दि ४ हं मिनि



नीला

दक्ष ललाट उर्ध्वं मधना सिका कर्णक
टिजानूपादद
गुक्का धिष्ठा
सर्वे विद्व
यहं ॥ ॐ



गगन काय समय जका वहा वदु मधुलं सर्व वि
ज विं दं दं का व म रुद्र ॥ वजा रुद्र दं दं य भा दं वि
व वजा रुद्र दं दं व रुद्र दं ॥ विकान निधं ज दं रुद्र दं
दं रुद्र दं वज्र दं य म रुद्र दं वल मा वा रुद्र दं वी ना रुद्र दं वृत्ता
कं लय सुव रुद्र दं धूया रुद्र दं दीया रुद्र दं गंधा रुद्र दं मं क (भा रुद्र दं
॥ ॥ ॥



ॐ सर्वविद् दृष्ट्वा ज्ञं वैशा समय स्वं समय
दा ॥ ॐ नमः २ मदा मनय स्वादा ॥ कं क ॥



ॐ स्वदिद्रं काव हाय क सूचिक वजा वि
चिक हा म द हा य त्स वै वि क हा क सिं द द
ह्य ज्ञा वं सा स म दूं स म य हा



कं

क

ॐ सर्वविद् दृष्ट्वा ज्ञं वैशा ॥ नील ॥



ॐ सर्वविद् दृष्ट्वा ज्ञं वैशा समय
स्वं समय दा ॥



ॐ सर्वविद् दृष्ट्वा ज्ञं वैशा समय
स्वं समय दा ॥



ॐ सर्वविद् दृष्ट्वा ज्ञं वैशा समय
स्वं समय दा



ॐ सर्वविरुद्धाष्टाय नमः ॥ छुक् ॥



ॐ सर्वविगंधाष्टाय नमः ॥ नील ॥



ॐ सर्वविकीर्णाष्टाय नमः ॥ कंक ॥



ॐ सर्वविद्वक्षाष्टाय नमः ॥ छुक् ॥



ॐ सर्वविद्वज्जलाष्टाय नमः ॥ छुक् ॥



ॐ सर्वविद्वज्जलाष्टाय नमः ॥ लव ॥





ॐ तिदुर्गतिपलिव धनममृतवाय कथं
 मय्य धर्मवक्रमूढ लल
 क्रासपिवाकस अस्मि नवक्रस
 दिगयववके दिगं दीङ्गाय तले हाक
 दिगयधिमक्राद दिग उरुविस्ववज
 अस्मिन् यो न सत्यं च ज वाय वा स्वज ॐ सां दू
 यनेति वज्र न दूय क हाक चक्र कनेसे अस्मि वज
 न सत्यं सां मात वाय वा ना सथा युग ॐ सां पन सां
 यनेति वक्र नापति यवनाय दीङ्गा हाक पश्चि द्वा द
 उरु ल उम उ विंगये यवनाय के ल स पल द डान मिस्वा
 अंक्र स द द दिने स व स्वज पल द डान स र विनाम निधन
 पश्चि कल स पल द न व धु मा ल ले न का स
 उरु ल उरु ल सां पल द डान ले ले क वा अस्मि स यां च का

कने पुजा ह ल य द ह ल ल संद्य
 दूय पूर्व अंक्र स दिङ्गा दिन पश्चि सिस्व उरु ल य धु
 य क न जा उ हा ल व कृति ल ले प ति का क म्म सिस्वा
 पल दि ति म अं ल का ल वा क ल स र द य ज थ न यि य ल क ग ल
 पश्चा व ल व जा व ल दि दि ग या ल वि य व व ज द दि ज म द धु
 पश्चि ना ग उरु ल दि सि अस्मि स या यो न ति ले व ज वा य व च न
 ॐ गाने त्रि स ल का लो व ति ॥

II-143

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

ॐ सर्वविद्वज्जीनं ॥ नमः ॥



ॐ सर्वविद्वज्जीनं ॥ नमः ॥



ॐ सर्वविद्वज्जीनं ॥ नमः ॥



ॐ सर्वविद्वज्जीनं ॥ नमः ॥



ॐ सर्वविद्वज्जीनं ॥ नमः ॥



ॐ सर्वविद्वज्जीनं ॥ नमः ॥



गगःकर्मप्रदायथात्वद्विजकावनयंव
सर्विकवजावि विकल्यं। उमं
नशमदामन
विह।



उं सर्वविद्वज्जासु यद्गुरुं ॥ नील



उं सर्वविद्वज्जासु यद्गुरुं ॥ कंक॥



उं सर्ववित्तभासु यद्गुरुं ॥ नक॥



उं सर्वविद्वज्जासु यद्गुरुं ॥ चाम॥



उं सर्वविक्रजासु यद्गुरुं ॥ शुक्र॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्रा यद्गुरुं ॥
नील



ॐ सर्वविरुद्धा यद्गुरुं
कृक ॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्रा यद्गुरुं ॥
सामा ॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्रा यद्गुरुं ॥
लुक ॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्रा यद्गुरुं ॥
कृक ॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्रा यद्गुरुं ॥
वक ॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्राय नमः ॥ कंक ॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्राय नमः ॥ कंक ॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्राय नमः ॥ कंक ॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्राय नमः ॥ कंक ॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्राय नमः ॥ कंक ॥



ॐ सर्वविघ्नहर्त्राय नमः ॥ कंक ॥



ॐ जमाघाजमाघदहो नमः ॥ कंक ॥



ॐ सर्वपायरुदसर्वायायविध्वनस्तु ॥
शुक्र



ॐ सर्वलोककामाघाटनमस्तु ॥ कंक ॥



ॐ गन्धदक्षि नमः ॥ ध्याम ॥



ॐ सर्वगमस्तु ॥ शुक्र ॥



ॐ गगधलावनस्तु ॥ कंक



उं ह्रीं नमो भगवते
वसिष्ठं ॥
नील ॥



उं ह्रीं नमो भगवते
वसिष्ठं ॥
लुक

जमना वसिष्ठं



उं ह्रीं नमो भगवते
वसिष्ठं ॥
लुक ॥



उं ह्रीं नमो भगवते
वसिष्ठं ॥
नील ॥



उं ह्रीं नमो भगवते
वसिष्ठं ॥
वक ॥



उं ह्रीं नमो भगवते
वसिष्ठं ॥
कंक ॥



उज्ज्वल यद्गुणायकमो वनधविष्णु
धयद्गु



उं धुनिरानयनिरानकूटद्गु ॥ वक्र



उं सप्तनरुद्गु ॥ नील



उं सर्वविग्नलक्याकस्वनीद्गु ॥ रुद्र



उं सर्वविलम्बकउज्ज्वलीद्गु ॥ रुद्र
नीला



उं सर्वोपायवन्धविभावनीयद्गु ॥ वक्र



ॐ सर्वे विसर्वाय यगन विष्णो धनी रुं
रुद्र ॥



ॐ शंका वृषद्रुं ॥ शुक्र ॥



ॐ मनःमदानय स्वाहा ॥ ॐ क्रमूनय स्वाहा ॥
ध्यान याग सा



ॐ धजा वृद्रुं ॥ नील ॥



मना वज्रघृष्टा गृह्णित्वा मदा मद्रा वधियात्
॥ स्वद्वयज्जका नहा वन्द्य मधुलायनी यंच
सूक्तं वज्रं विराग्य ॥ ॥ ८

ॐ निष्ठा वृद्रुं ॥ धीमता ॥



उं वृक्षाष्टी यद्गं ॥ ह्यम



उं वृक्षाष्टी यद्गं ॥ नील ॥



उं वृक्षाष्टी यद्गं ॥ पीत



उं वृक्षाष्टी यद्गं ॥ वक्र



उं वृक्षाष्टी यद्गं ॥ ह्यम



उं वृक्षाष्टी यद्गं ॥ वक्र



उँवजमालादां॥ स्वग



उँवजगीनादां॥ पीन



उँवजनृत्यादां॥ वक



उँवजयूयादां॥ धुक



उँवजधूयादां



धुक

उँवजदीयादां॥ पीन



उं वज्रगंधाहं॥विष्णु



उं मेतयसुव

ह्लाहं॥वीर॥



उं जमाघादहं॥वीर॥



उं सर्वपापजहाः॥हृद॥



उं सर्वह्लाकटमाघाटनमहाहं॥वीर॥



उं गंधदहं॥हृद॥



उसुवंगभादो॥

स्वर्ग



उरागदागंजादं



याग



उनेहोकावृदं॥नील



उजमग

पशुद्रा॥नील



उवन्दुयरादो॥स्वर्ग



उरुदयामादं

वक्र



उंजावनियुताङ्ग॥व क



उंवरुगार्शदं॥नील



उंजस्यमणिदं॥छुक



उंयुक्तिरान

कृष्णदं॥व क



उंममरुताङ्गदं॥यी



उंवजांक

छादं॥छुक



उं वज्रपा (क्षा सं) नील



उं वज्रसूटा सं) शुक्र



उं वज्रां व (क्षा सं) विष्णु



उं नैषा रसावत सवेद मृगिय निष्पन्न



उं वज्र वाच ॥ उं टं किं ज सं टं किं ज सं ॥ नील



उं वज्रस त्वस मय मनू या वय त्यादि ॥ पीत



उपेय यज्ञानयूजाः अष्टमा
ध्यायः वादनः



साकं सिद्धयः
मि

नमस्तुभ्यं सिंहाय धर्मवक्त्रवत्कः १ ॥ नमस्तुभ्यं वज्राक्षी वाय धर्मधातुस्वरुवत्कः २ ॥ नमस्तुभ्यं वज्राक्षी वाय धर्मधातुस्वरुवत्कः ३ ॥ नमस्तुभ्यं वज्राक्षी वाय धर्मधातुस्वरुवत्कः ४ ॥ नमस्तुभ्यं वज्राक्षी वाय धर्मधातुस्वरुवत्कः ५ ॥ नमस्तुभ्यं वज्राक्षी वाय धर्मधातुस्वरुवत्कः ६ ॥ नमस्तुभ्यं वज्राक्षी वाय धर्मधातुस्वरुवत्कः ७ ॥ नमस्तुभ्यं वज्राक्षी वाय धर्मधातुस्वरुवत्कः ८ ॥ नमस्तुभ्यं वज्राक्षी वाय धर्मधातुस्वरुवत्कः ९ ॥ नमस्तुभ्यं वज्राक्षी वाय धर्मधातुस्वरुवत्कः १० ॥

व्याख्यारूपं ॥ व्याख्याध्यायदीयाचगंधादवीनमस्तु ॥ १० ॥ दानमध्यास्तितादेव जंकुहायाहस्तकः ॥ द्वायरावनी
 ऊर्गं दानमस्तु ॥ ११ ॥ वदिकादीस्तितायव बलादीदानयाध्यत ॥ मृदिकादीद (हास्तितावाधिसत्वः) नमस्तु ॥ १२ ॥
 वृक्षदानदयः ॥ लोकयालाग्रुगय ॥ अग्निनादासवायुच रुताधियगिनमस्तु ॥ १३ ॥ अननस्तु नोऊनसंमुखं
 मधुलागः ॥ वृक्षघृष्टधामस्तु ॥ दं गुरुमदादव ॥ १४ ॥ यथादात्मदेव आत्मसंमुखलकल्यथ ॥ प्रवरावयमान
 येमधुलमादियागः ॥ १५ ॥ ॥ गिआदियागनामसमाधि ॥ ० ॥ गुरुमधुलनाऊनीनामवक्षामि ॥ ५ ॥ अकावामहवस
 वेधर्मासायनननवान् ॥ गदथाधिमादकादहादिक्रवेलाकधातु ॥ धातुहाधून्यतामधिमूयधून्यताहंकारं आत्मानं यध्यत
 ॥ १ ॥ गगाहंकारं निश्चयनवृक्षवायुमधुलं ॥ गस्यायदिवंकारं वक्षामि मधुलं ॥ गस्यायदिवंकारं वक्षामि मधुलं ॥ गस्यायदिवंकारं
 वक्षामि मधुलं ॥ गस्यायदिवंकारं वक्षामि मधुलं ॥ गस्यायदिवंकारं वक्षामि मधुलं ॥ गस्यायदिवंकारं वक्षामि मधुलं ॥ गस्यायदिवंकारं वक्षामि मधुलं ॥

दा॥ उं हं वज्रकर्मकां॥ उं वं हं कानक्षं॥ वज्रवन्धवं॥ वज्रानलदनद्वयथसथरुऊनहं॥ उं वज्रचक्रं॥ गस्यायनिवज्रदुरुकर्म
मृदयारुं कानसिगनियन्नवज्रमदिवत्तहिषवक्रुतांगानवज्रुवसुवज्रुदाववज्रुगानदुरुधिरं॥ वज्रुवज्रुका॥ वसुसर्वेष्वदाननि
यदुसंधिषु॥ वंशक्रवज्रविद्रुगं॥ दावाह्वदानवचिगं॥ वज्रुस्रुसमायूकयद्वृक्षमरुधिरं॥ जल्यनमधुलतल्लयकं वज्रा
वलियलिवृगं॥ गस्यानारायनिशिंहासनं गस्यायनिवज्रुमधुलं॥ वज्राक्षवमध्वष्वदमधुलं॥ देवतास्तुतं॥ वाक्त्रमधुलस्यद
वतास्तुतयद्रिकाया॥ जल्यविंशतिवज्रुमधुलं यक्ष्म॥ सिंहासनायनिवज्रुमधुलज्जादिककावाक्त्रियक्ष्मायायस्वनूय
यीक्ष्मिगं॥ जल्यवज्रकसमाधिसमायन्नवाधिविरुस्वनूयनसर्वसत्त्वार्थदुरुसम्यन्नमधुवयंरुवति॥ उं मूत२ मदा मूनयस्वा
दा॥ जूननमकुहाधुक्षसिंदवाजनिष्यन्नारवति॥ ॥ सर्वेनीववदानामसमाधिः समायन्नसर्वधुधुगधमवकमडा॥
तग॥ कर्मूनयः ददयः ज्जावदवज्रुमधुलं॥ गज्वज्रुमधुलं सर्वोसांमकाक्षिनिष्यायक॥ वज्राक्षीयामीलस्वयावदजांवहायय

कंशावयवः॥ यूनवागल्यस्वस्वस्तनविकथनः॥ पूर्वोवडं वडं रुद्रः॥ नत्यवितनं वला श्रीवनीलाववदमूडा यन्त्रिमालयभारुमः॥
द्रोः नत्यविहारं यथा श्रीषावकध्यातमूडा उरुवावः उं विष्टरुमज्जुनत्यवितनविष्टा श्रीदविगाइरुयमूडा॥ उंकावः (६) त्मूडवुड
कडा श्रीवतगनः॥ अं (७) यथावस्तुनस्य सम्यकयमस्तुवदमधुलः॥ सव्यनसूर्यसंराकवामदसुकटिचिगासिगवकवधुसू
धातुकमरावयवः॥ इंकाववीजसंजागाधजा श्रीवतथागनः उं त्मूडवुडयाहीधुः॥ नेमयावनीयधुकः॥ यमस्तुवदविष्टववक
कुकवधुकः॥ चिनामहिधुधायसलभासवेष्टधकः॥ उंकाववीजनिष्ठनलीधुः श्रीवतथागनः॥ कडाघटकडावदनासया
वडत्तुज्जुः॥ यमवदनिष्ठादकस्य स्वलिदक्षिणगगलवधुनिराकायावामयसुकधविहीः॥ उंकावविजनिष्ठनधुः श्री
वतथागनः॥ धर्मचाभावसत्वानामीष्टानाववडत्तुज्जुः॥ कुन्दवधुसन्निरामुद्रययधुधविहीः॥ सर्वेनविष्टयमस्तुनिष्ठधुः
वमधुलः॥ इं गं डो जं॥ नमस्तुष्टमूत्रायदयादुत्तुज्जुः किं वलाविकनकातययमस्तुवदमधुलः॥ लाक्षादिदवावलाविकनव

धुक्धाविदःसिगयीगवक्कासविद्वदधुक्कां॥तथांमूडाविधियनयूवमदयथाकिग॥
धूयादिदयश्चत्वात्रियमस्तुचन्द्रमस्तुल॥चरुकोहावृवधुक्कलकमहागु॥उं सर्वसंस्कार
तावविदुद्धमदानययनिवावस्वादा॥मकुहादस्तुत्तयूवदावयावदयस्तिगःमगुयदिचरु
ययद्विगःसर्वमूडावधुक्कमनरु॥यीगवधुक्कयसादिग्रनागययकदक्षिदा॥वामकक्षिकागु
यमाद्यदहागुयीगवधुक्कयसाहल॥वामदस्तुकटीन्यष्टदक्षिदायमनृगकः॥हनीयावाधिस
वधुक्कयसाहलामूडाजंक्काधाविदः॥चरुर्थसर्व॥हागनमहिप्यागनमहिस्तथाहागयीग
वाममूक्षिकटिन्यष्टसत्वययकिनस्तिगं॥चत्वावावाधिसत्वाग्रदक्षिदादस्तुगंधर्वाद्यययूनिगं॥
प्रदालपुस्तिगा॥यथमगंधस्तुवसिगस्यामग्यवधुक्का॥मूडयदक्षिदाप्रधन॥द्विगियद्वंरामाना

ह्युपलादिवा समुद्रय स्वप्नधा विहा ॥ वामदक्षकटिन्यसुथासत्त्वानां दुःस्वप्ना कथा ॥ हृत्पीयंगराक्ष
पीतमिहावर्ष्मरुः सवो वनदावर्जितः मूद्रयदक्षिणदक्षयमसुधमेवार्जक ॥ वामदक्षकटिन्य
सुध सर्वोकाहाधवयव ॥ चतुर्थो ह्यनकसुध सर्वोसां पत्रियूरक ॥ नीलवर्धुक संकासविना
सुधाविददः स्वभावकः ॥ यश्चिमदानाहिनः यमसु चन्द्रमधुल ॥ यथमममृगयुशानमवंदव
धायमूद्रादक्षिणयाहिनां ॥ वाममृष्टिकटिनसुविस्मं ह्युजायुदायकं ॥ द्वितीयचन्द्रयुशानामजहान
मूद्रादक्षिणयाहिनां ॥ यमचन्द्रविध्वंशु वाममृष्टिकटिस्तुगः ॥ हृत्पीयरुद्रयालग्निसिगवकवर्धुक
हिनां ॥ कालिगवतसंधाय वाममृष्टिकटिस्तुगः ॥ चतुर्थवाधिसत्वथ कालिनीयसंहिन ॥ वकव
यथमवृद्धयुगं वज्रगरुडिगामगः ॥ सिगनीलवर्धुसंयुक्त मूद्रादक्षिणयाहिनां ॥ उत्पलव

अङ्गयानाममङ्गिजकषसंस्तिगपकंदन्दुवर्धुसंकाहं मूडादसुदयनरुगान्नकलसधायस
ठसंस्तिन॥नकवर्धुयुगालमूडादक्षिद्ययाधियाहिता॥यमसुनलकटकुवाममक्षिकटिस्ति
नामगः॥सुवर्धुवसंकाहंमूडादक्षिद्ययाहिता॥नलसंजलीकादिव्यवाममक्षिकटिस्तिगः॥प्रवन्व
जंकावजंवीसंरुगावजंकाक्षिसिगदुति॥पूर्वदावकवात्याकुवजंकाक्षिमयिस्तिगा॥इंकाववीजस
वर्धुयुगः॥सुगुदस्तायांवजसंवृग॥वंकाववीजनियन्नवजस्तुटाकंसयगः॥दस्तायांष्टयल
ववीजनीजागावजंवहागुडरुव॥वध्वासंगुह्यदस्तायांविध्ववर्धुमदायुति॥यमसुवदु
ततःस्वकायमूडिष्ठाकसिंदहदिवजाशूयललागंवलाशूयकधुयभाशूयकायविध्वडशूय
ववकुसुःगीक्षाशूय॥क्षकसिंदगंजाशूयथागंगनालदुगाशूयलाक्षावजाशूयस्यवाम्या॥

ॐ सर्वविद्वानघाटयद्वा॥

उसर्वविधज्वकुरु॥

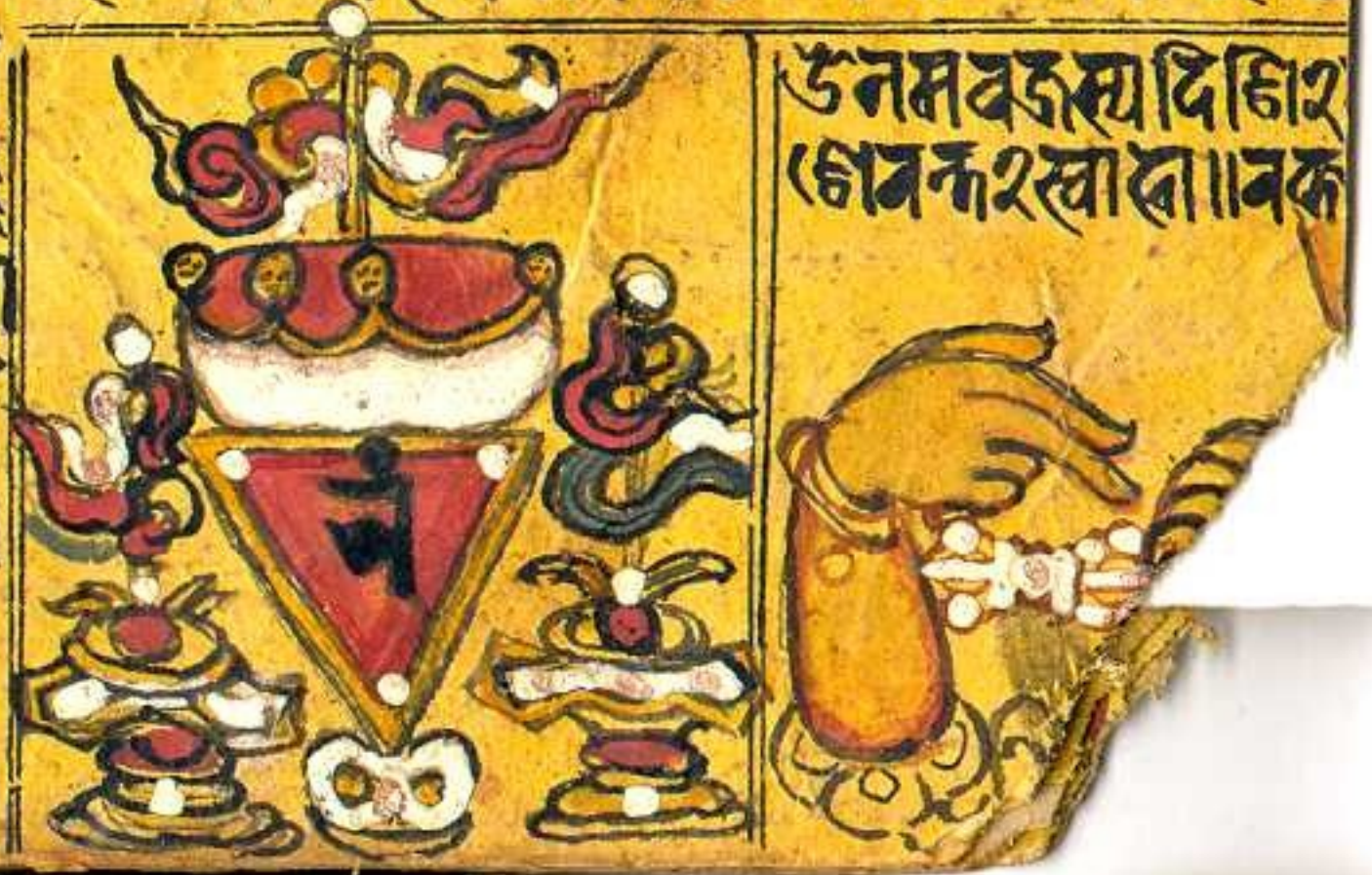
उत्तममाङ्गवैशा॥



वडां
वडां
वडां
वडां

वायुहायूजावजाश्रीपादिकथागानेः सत्ववजि नलवजी धर्मवजि कर्मवजि सुवयितासमाधु
हाययन्त ॥ ॥ अरिषकदद्यात् ॥ ॥ अरिषकंमहावज्यादि ॥ ॥ यंवारिषकादिजुधियकिदहाय
सर्वगथागतधूययूजामघसमूहसु वहासमयइ ॥ ॥ ५ सर्वगथागतयूययूजा ॥ ॥ ५ सर्वगथागत
धयूजा ॥ ॥ ५ यंलाघंस्तुति ॥ ॥ ५ गगः असमाचलाः समंगसावधर्मिनः कनूक्षत्सकाजगति
गुहासिद्धिदायिनः अहालाः सर्वनाशधर्मिहा ॥ ॥ गगहासमाडयगगानविद्यगं गुहावहावहाक
सिद्धिदा ॥ ॥ न विगगायमव असमंगसिद्धि ॥ ॥ समगासमाकनूक्षवगगाहिनायुनिधानसिद्धि
नयवासमंतिनी ॥ ॥ हागगविनाचिगमहाहात्मनी ॥ ॥ ननिवाधगाकनूक्षवानिकाववंवजगंलाय
गषूससमाकिंतांगगा ॥ ॥ सगगिमगव्यिजहासूधर्मगा ॥ ॥ असमयागसिद्धिवलदाददंस्तुम ॥ ॥ ववं

लाकवत्रसिद्धिदायिकासर्कारांशिवधगणिकाजनादृणा ॥ ॥ कर्मवाजशीनामसमाधिः ॥ ॥
 ॥ ॐ मिजायकारा ॥ ॥ गकावलिरावना ॥ यकावदावायमंडलं नीलं यदयविमंकावधमिमु
 संजातवृत्रिकायाउयविजाकावजंवृदगुणजनंगणरुकादियवियवितं कुंजां जिह्वं लां मां पां तां ऊं का
 यदीयं वृयं दलितं ॥ तद्वाययविदागं हं कावजं हुं कवजं विलीयास्तुतिरुं गं यावमं हं ददवीयमानं विराव
 विराय ॥ तस्माच्चंद्रमंडलीजागयाक्षलथः सुलितवस
 मिरिदहादिगवर्कनादवदवीनामानियसफकीवः
 समुदयश्चामृगमानियगुं वसम्यादयुरुगुगुकाव
 क्षिवजवन्दमधुलं गं ववीलिनवलाकगुगुकाव
 क्षणीनिवालानिजुधितिष्ठत ॥ ॥ लाकयावमृज



डनमवदस्यदिहिश
 (हानकश्चादा॥वक

ॐ यमाय स्वाहा ॥ नील



ॐ सर्वरुत



रायं कनकद्वय
स्वाहा ॥
कुक

ॐ हृत्पृत् हृत् ह्रिदिका
स्वाहा ॥



ॐ कवलाय स्वाहा ॥



ॐ ईं

पीक



शिव स्वाहा ॥ कु
कु

ॐ ईं वक्र न स्वाहा ॥ पीन



ॐ वंदानदागधियतिथस्वादा



ॐ जइवृथिवस्वादावायीन



ॐ जसुनयस्वादा॥ ६५ क



उदवा सुना सर्वरुजं गसिद्धा सा सुयुष्मा कटयुगताम्बु गन्धवायदागुदजायगम्बु यकविहमानिव
धीतनदं कृताञ्जलिस्त्राययानिनां ॥ सयुग्वा सरुत्यसंधे ॥ ६५ स्वां सुदुज्जनगुदार्था ॥ यमवृष्ट
यव यवाद्याननविमलु लवनगनयुसर्वयु यवसक्ति सवित्स्वसर्वेण वसंगमयु नत्तानयवायिकु
नयु कथयु स्वययु सदादधियु धावयु सावानिपनयु दवाधिवसा सुकलननयु सन्नावयदव
यथयुसाना सवकृञ्जानीयलहगहग गृहवसवथ सविताचवत्ववयु यवेकवृक्षयुमहाय

सिंहादिपक्षाध्यायिष्यथ. वसन्ति धामा महाकपीषू दीप्यन्ति दिवा च कृतावयथ. मन्वन्महा
 नधूयन् वनीयूषा विवयन् नक्षत्राङ्गु. सुजं तु यीवन्तु संवत्सरं सरुलं शयं सुखादा ॥

उं वी नाहं

॥ नील ॥

उं वं हाहं ॥ पीत ॥

उं मन्व जाहं ॥ व्या



उंकांहाइं॥वीर॥



उंरुनाइं॥वीर॥



उमृदगाइं॥वीर॥



उंघटसाइं॥वीर॥



उंगुं जाइं॥



उंगिमि लाइं॥

